ख़ूबसूरत ख़्याल

दिलबर

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dilbar 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-332-4

Cover Design: Aman Sharma
Typesetting: Pooja Sharma

First Edition: August 2025

लिखुं हर वक़्त तुम्हें खूबसूरत ख्यालों में एक ऐसा हसीन मंज़र दे दो,
ना निकल पाओ नब्ज़ से मेरी कभी तुम ऐसा कोई बवंडर दे दो,
मेरे काग़ज़ और क़लम बस लिखें नज़्में तुम पर हर पल और हर पहर,
कोई ऐसा मीठें दर्द से सना दिल में हमारे इश्क़ भरा ख़ंजर दे दो।

कर कर के हुस्न की आपके तारीफ़ मैं एक हद कर दूँ,
एक लिखूँ शायरी आप पर और फिर लिखना बंद कर दूँ,
आप तो नज़ाकत की किताब की तरह हो मेरे दिल के क़ुतुबखाने में,
फिर चंद लफ़्ज़ों में कैसे आपकी मासूमियत को नज़रबंद कर दूँ।

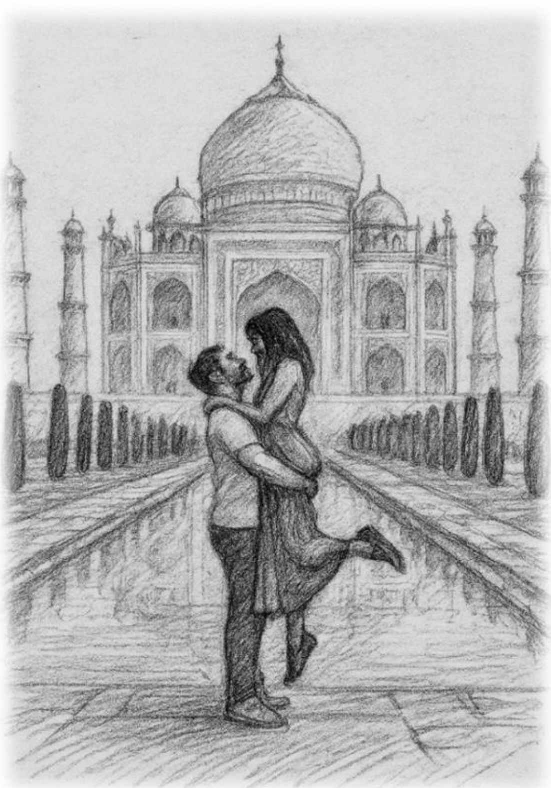

सोचा दो लफ़्ज़ लिखकर आपकी नज़ाकत पर आपके नज़र कर दूँ,

चाँद भी माँग रहा है भीख़ आपसे हुस्न की सोचा आपको खबर कर दूँ,

पता नहीं कैसे दस्तक दी है आपने हमारी दहलीज़ पर अनजान बनकर,

सोचता हूँ बनाकर हमसफ़र आपको बाक़ी सब को ज़िन्दगी से बेदख़ल कर दूँ।

मत रोक चल आज ख़ुद को मिलने देते हैं,

उदास सी इस ज़िंदगी में रूहों को खिलने देते है,

क्या पता खुश मिज़ाज हो जायें ये ज़िंदगी एक ज़ाम के सहारे ही तुम्हारे साथ,

चल मिलने की वो ख़ुशियाँ ज़ेहन में धीमें से सिलने देते हैं।

जब मिलेंगे आपसे तो आपके लिये लिखे लफ़्ज़ों से भरी एक किताब देंगे,
उन यादगारी लम्हों में आपको हम मुस्कुराहटें बेहिसाब देंगे,
आप बैठे रहना सामने हमारे सामने होठों में दबाकर बेशुमार वो मुस्कुराहटें,
क़सम से उस सादगी पर आपकी हम सारी ज़िंदगी गुज़ार देंगें।

अब समझे हम के मुस्कुराहटें भी ज़मीदोश करती हैं,

हज़ारों सिरफिरों के दिल क़तल वो हर रोज़ करती हैं,

हम तो हाज़िर जवाब हैं अपनी फ़ितरत से ,

पर क़सूरवार हैं ये आँखें हैं उनकी जो हमें ख़ामोश करती हैं,

कुछ कहा भी नहीं उसने पर फिर भी उनका कुछ क़सूर तो है,
ना कोई गुफ़्तगू हुई उनसे फिर भी मुझपे उनका सुरूर तो है,
एक अजीब हसीन सी कशिश होती है दिल में उनके साथ होने से,
हाथ वो भी थाम कर चलते है हमारा तो हमें इसका ग़ुरूर तो है।

वो चुप रहते हैं पर फिर भी हमें कुछ ना कुछ
सुनाई देता है,
हर एक पल उनसे दूरी का हमें बेबस तबाही
देता है,
शायद इज़हार में यकीन नहीं रखते हैं वो,
पर झुका के नज़रे उनका मुस्कुराना सब गवाही
देता है।

एक मुल्क हैं मेरे ज़ेहन में ख़्वाबों का जहां वो राज करते हैं,
मुज़रिम हैं वो हज़ारों दिलों के क्योंकि क़ातिलाना अन्दाज़ रखते हैं,
साबित भी नहीं होता उनका कोई जुर्म किसी इश्क़ की अदालत में,
क्योंकि हर तय जुर्म वो आँखों से बे-आवाज़ करते हैं।

ये मुस्कुराटें यूँ ही तुम अपने चेहरे पर तस्दीक़ रखना,

हमें अपने यूँ ही कहीं बस हर वक्त नज़दीक रखना,

बस एक पनाह दिये रखना अपने दिल के तहख़ाने में हमें कहीं,

और हुस्न का अपने हमें यूँ ही बस बनाये मुरीद रखना।

एक नशा हो तुम जिसकी लत से अनजान थे हम,

बेक़द्र के नाम से बदनाम थे हम,

हसीन लग रही है अब ज़िंदगी ये आपकी मौजूदगी से,

वरना इश्क़ की गलियों में चंद दिन के मेहमान थे हम।

रहम करो ए हुस्न वालो कहीं किसी की जान अटक जाती है,
नुकीली आँखों और नशें सी अदाओं से हमारी रूह भटक जाती है,
खो जाते हैं हम कहीं और अपने आप के होश नहीं रहते,
जब एक झलक आपकी धीरे सी हमारे दिल में धड़क जाती है।

दिल में अगर हो कोई कश मकश तो बताया कर ना,

अगर है कुछ अपना पन हमसे तो हमे सताया कर ना,

दास्ताँ ये ठहर ना जाये ना कहीं इंतज़ार में तुम्हारे ,

अगर है इश्क़ हमसे तो रोकता कौन है जताया कर ना।

महक कर जब जब वो निकले हैं गली से,….2

चंद रोज़ अख़बार में इश्तहार निकलते रहे मरने वालों के।

तेरी आँखों के समंदर में कहीं आशियाना मिले तो मेरा वजूद ठहर जाये,

फुर्सत से करूँ जब दीदार आपकी मासूमियत का तो दिल से पाक इश्क़ की गुजर लहर जाये,

वो तशरीफ़ लायें हमारी दहलीज़ पर तो क़यामत होगी,

वरना इंतज़ार में उनके ए ख़ुदा ज़िंदगी मेरी का हर पहर गुज़र जाये।

वाक़िफ़ नहीं हो तुम उस नूर से जो तुम छुपाए बैठे हो,

हुस्न से अपने अरमान हज़ारों सिरफिरों के जगाये बैठे हो,

दरख़ास्त है मेरी हुकूमत से के संवरने पर रोक लगा दी जाये आपके,

पता नहीं अभी और अपनी मासूमियत में और कितने ज़लज़ले दबाए बैठे हो।

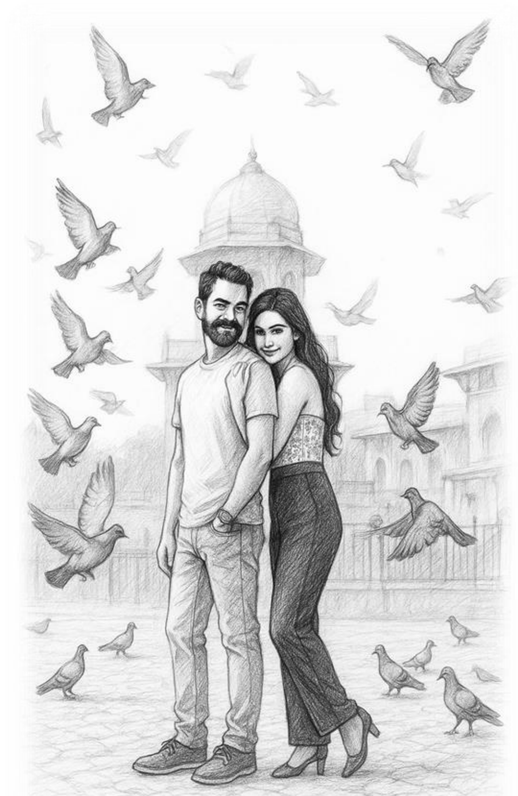

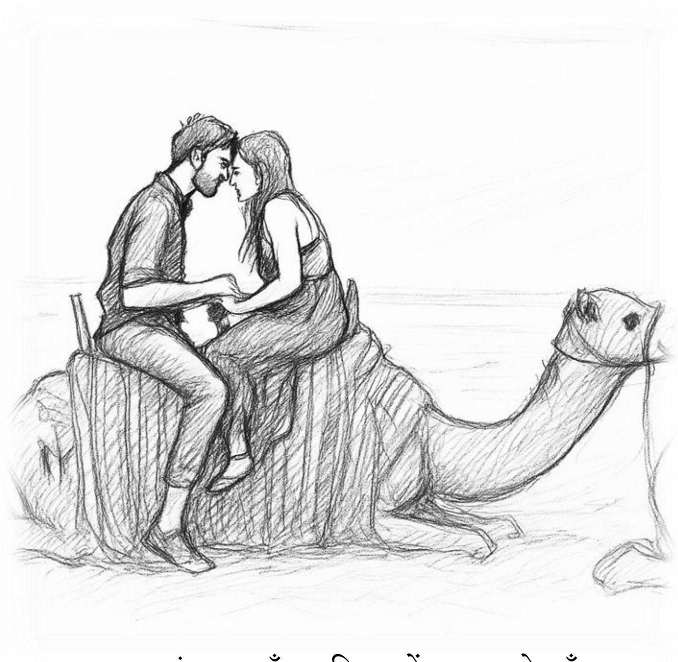

इंतज़ार करूँ या फिर तुम्हें बुलाना छोड़ दूँ,

बोलो क्या मुस्कुराहट पे तेरी अपना वक्त गँवाना छोड़ दूँ,

लाख बुरे होंगे हम हज़ारों लोगों के लिए,

पर अगर बुरे हैं हम तुम्हारे लिए तो क्या तुम को सताना छोड़ दूँ।

हाँ यूँ ही कभी कभी मैं अजीब हो जाती हूँ ,

दूर रहकर भी अपनों के करीब जो जाती हूँ,

ख़ामोश रहता है दिल मेरा टूटकर भी,

बनाकर सारा जहान अपना फिर भी बदनसीब हो जाती हूँ।

महज़ किताब नहीं ये मासूम ज़ज़्बातों का उन्हें अफ़साना लगा होगा,
महसूस करने में ये सब लिखने वाले को एक ज़माना लगा होगा,
बुन बुन कर उस शायर ने ये जब सुनहरी नज़्में लिखी होंगी,
मुक़द्दर में नहीं हैं वो कितना मुश्किल ये समझना रहा होगा।

गहरी आँखें उनकी कहीं हमें डस ना जाएँ,
साज़िश में हुस्न के उनकी हम फ़स ना जाएँ,
गुफ़्तगू नहीं हुई है अभी उनसे हमारी,
हुई नज़दीक़ियाँ तो कहीं दिल में वो बस ना जाएँ।

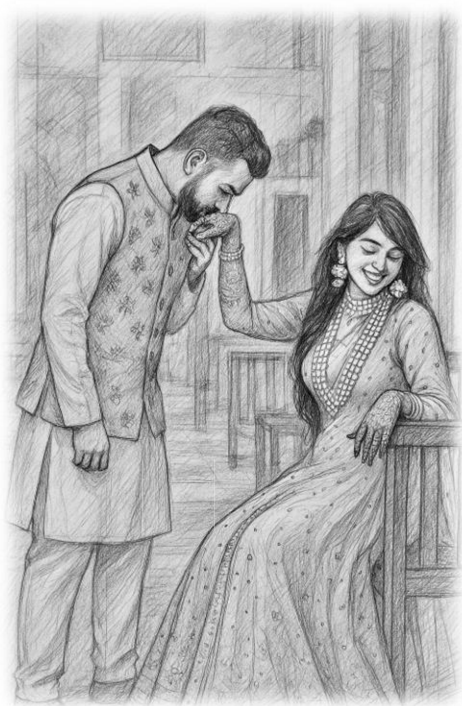

दूर हैं वो मुझसे पर दुआ है हमेशा मेरे एहसासों में रहे,

खूबसूरत उनका नाम हर वक़्त मेरी साँसों में रहे,

जब मिलें वो मिलें हमें इस कदर,

के ख़ुशबू उनके बदन की तऊमर मेरे लिबासों में रहे।

दिल है के उनके हुस्न पर आज कुछ तराने लिख दूँ,

अप्सराएँ लेती हैं उन से सलीक़ा संवारने का ऐसे कुछ अफ़साने लिख दूँ,

दर्द में हैं कुछ शख़्स के उनकी लकीरों में नहीं हैं वो,

ज़ाम पीते हैं जहां उनके नाम से वो कुछ मयख़ाने लिख दूँ।

खूबसूरत किरदार में मैं उनके कहीं बह ना जाऊँ,
और मिले दर्द दूरियों के मुस्कुराकर मैं सह ना जाऊँ,
आईना भी फ़िदा होता है हर रोज़ उनके दिलनशी हुस्न पर,
कही धीमें से ये सच मैं सरेआम कह ना जाऊँ।।

मुस्कुराहटों में उनकी एक मासूमियत तो है,

गहरी आँखों में भी कोई ख़ासियत तो है,

हवाएँ हड़ताल पर हैं के ख़ुशबू नहीं आई उनकी आज,

पूछता हूँ उनसें के सब ख़ैरियत तो है।

आदायें देखते हैं हम उनकी चुपके चुपके ये उन्हें पता ना हो जाये,

उनसे किसी गुफ़्तगू में फिसले ज़ुबान मेरी और कोई ख़ता ना हो जाये,

बेशक़ीमती वक़्त सोचकर देना अपना हमें,

मासूम हूँ में कहीं तुम से वफ़ा ना हो जाये।"

वो चेहरा अपना पर्देदार रखें हैं,

लगता है ऊँचे किरदार रखें है,

मेरे बड़े सवालों के छोटे जवाब देते हैं वो,

लगता है अपने पास कुछ उन्होंने अल्फ़ाज़ नायाब रखें हैं।

हुसन वालों में हमने बस आज तक ग़ुरूर देखा है,

बिना नशे के उनकी आँखों में भरा सुरूर देखा है,

उन्हें देखा तो लगा आज के कोई अलग भी है इस जहान में,

लगता है ज़िंदगी का सच उन्होंने पास से ज़रूर देखा है।

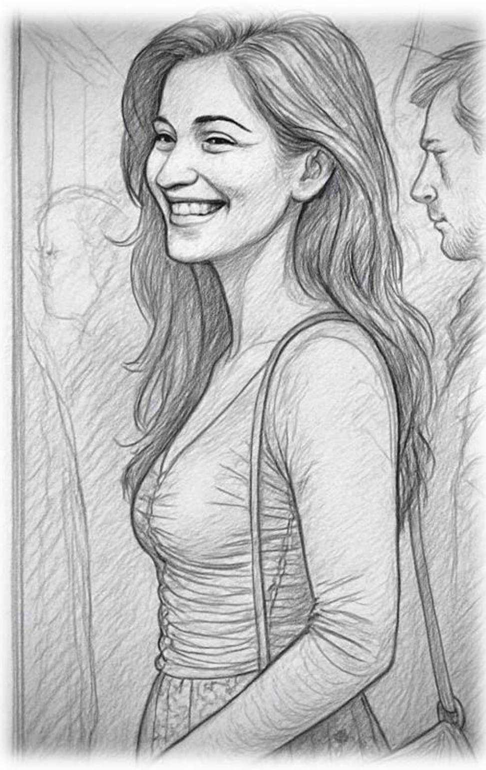

कम गुफ़्तगू करते हो , कहीं तुम कोई जासूस तो नहीं,

लगता दिल को लगी है कोई मेरी बात, खता मेरी कोई महसूस तो नहीं,

ख़याल मेरे अगर कलम से नज़म बनकर कहीं दिल में उतर जायें तुम्हारे,

इसमें कोई मेरा क़सूर तो नहीं।

तुम शायर हो मैं कैसे मान लूँ,

बिना गुफ़्तगू के तुम्हें कैसे जान लूँ,

नासमझ सी मैं अभी क़ैद हूँ अपने दिल के तहख़ाने में,

बिना जाने के दिल में तेरे क्या है तुम से मैं दोस्ती कैसे ठान लूँ।

जो भी हो जैसे भी हो तुम जग ज़ाहिर लगते हो,
इंसानों को समझने में माहिर लगते हो,
तारीफ़ है के तुम मुस्कुरा कर जी रहे हो हर पल,
ज़िंदगी की हर गली से गुज़रे मुसाफ़िर लगते हो।

ख़ुदा ने ख़ुद जब इत्मीनान से तुम्हें बनाया होगा,

देखकर ताज्जुब से एक बार तो शरमाया होगा,

सोचता होगा कि क्या नायाब हुस्न तराशा है मैंने,

कहाँ छुपाऊँगा इसे सोचकर बेइन्तिहा घबराया होगा।

राबता भी नहीं है उनसे कोई हमारा पता नहीं फिर इंतज़ार क्यों है,

चंद लफ़्ज़ों की हुई गुफ़्तगू में मेरा ज़हन पता नहीं बेक़रार क्यों है,

अजनबी है वो पर कुछ बात तो है उस शख़्स में दूसरों से जुदा,

नहीं तो मिलने को ये दिल मेरा इतना बेसब्र हर बार क्यों है।

लगता है सँभल कर करते हैं वो गुफ़्तगू अनजानों से ,

क्योंकि वाक़िफ़ हैं वो अपने हुस्न के नशे से लोगों को हो जाने वाली आदत से।

एक पैग़ामों से भरा ख़त हूँ मैं,

तकलीफ़ की बारिश में आपकी छत हूँ मैं,

आहिस्ता आहिस्ता उतारोगे मुझे अगर ज़हन में,

लग गया अगर तो एक बेशुमार लत हूँ मैं,

क़ीमती वक़्त को मैं कहीं बर्बाद कैसे कर दूँ,
दबे मेरे अरमान कहीं आबाद कैसे कर दूँ,
कौन हो क्या हो कहाँ के हो मुसाफ़िर पता नहीं हमें,
फिर इश्क़ हैं तुम्हें हमसे इस पर एतबार कैसे कर लूँ।

ख़्वाबों का लिबास पहनें जब हर रोज़ वो उठते होंगे,
उलझे बालों से उलझे जज़्बात कुछ तो कहते होंगे,
फिर बंद दबी आँखों से एक मुसकुराहट जब निकलती होगी,
सोचो फिर हम कैसे उनके हुस्न के मिले सदमे सहते होंगे।

इश्क़ बेशुमार है इस ज़िंदगी से मुझे,

ना कोई दरकार है इस ज़िंदगी से मुझे,

ना गीले हैं ना शिकवे इस ज़िंदगी से मुझे,

सब्र और सूकून चाहिये बस इस ज़िंदगी से मुझे।

इश्क़ मेरा अगर किसी रूह को हसीन ना बना दे तो कहना,
मेरे देखने भर से ही अगर ना महक जाये जिस्म तो कहना,
जो शहज़ादी तराशूँगा मैं अपने अल्फ़ाज़ों से अपनी शायरीं में,
सुनकर उसे हर आशिक़ सिरफिरा ना हो जाये तलब से तो कहना।

आज भी वो एक शख़्स दिल में बेनाम रहता है ,

गुजरे उस वक्त के अल्फ़ाज़ आज भी तमाम कहता है ,

हर रोज़ जब गुजरता है एक क़ाफ़िला उसकी यादों का मेरे ज़ेहन से,

तो फिर हाथों मेरे एक ज़ाम शराब का हर रोज़ रहता है ।

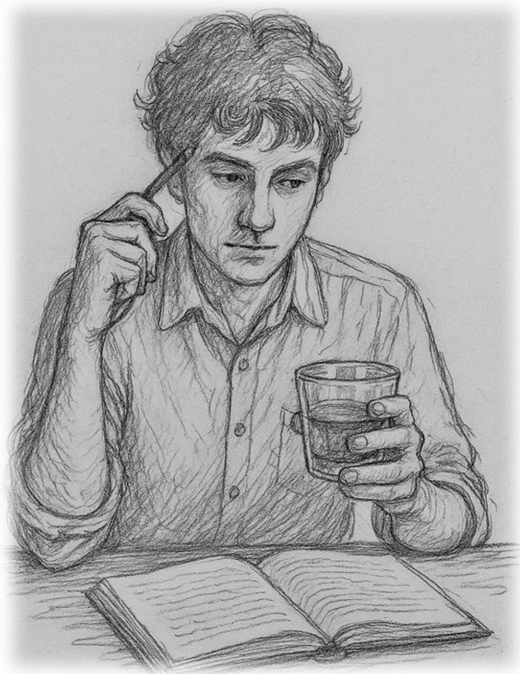

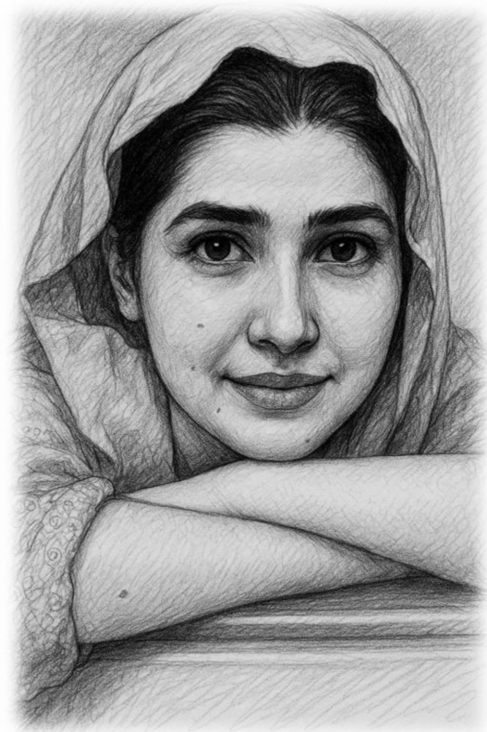

दीदार से उनके लगा हमें जैसे वो कोई ग़ैर नहीं ,

चर्चे हुस्न के ना हो उनके जहाँ ऐसा कोई शहर नहीं,

वो निकले हैं दौरे पर शहर के बन सँवर कर आज,

लगता है अब इस कायनात की खैर नहीं ।

सुर्ख़ श्याही से लिखा मेरे इश्क़ का वो एक बस अल्फ़ाज़ बन जाए,

रूह से रूह में सुनी जाए ऐसी वो सुनहरी आवाज़ बन जाए,

बस धीमें धीमें धड़कता रहे उसका नाम मेरे सीने में कहीं हर वक़्त,

बस ऐसा कुछ उसका मेरी ज़िन्दगी में नायाब सा अंदाज़ बन जाए|

धीमें धीमें सारी उमर साथ चलने का आज चल इरादा करेंगे,

मुश्किलों से भरी भी अगर होगी ज़िन्दगी तो,

साथ निभाने का वादा करेंगे,

जुर्रत अगर मौत करेगी ज़ुदा करने में हमें एक दूसरे से,

सुपुर्द-ए-ख़ाक की ज़मीं का हिस्सा भी हम आधा आधा करेंगे।

कोई दिल से हसीन मिले हमें और मामला पेचिदा हो जाए,

करु दिल की गुफ्तगू जिस से मैं बस वो औरत मेरी पसन्दीदा हो जाए।

बाहों में लेना ऐसे कभी के एक दम बिखर जायें हम,

छूना ऐसे कभी हमें के रूह से निखर जाएँ हम,

जादू करना ऐसे कभी हम पर मोहब्बत का ए दिलबर,

की तुम्हें याद करने भर से मुस्कुराकर एकदम सिहर जाएँ हम।

हाँ अगर हो तो बस नज़र झुका देना,

इज़्ज़त से ना आयें पेश तो ठुकरा देना,

एक मामूली सा खूबसूरत ख्याल हूँ मैं चंद लम्हों का,

आ जाऊ अगर ज़ेहन में तो बस मुस्कुरा देना।

जब मिले वो गले तो बाद एक हसीन सुकून बन जाए,
लिखे मेरे लफ़्ज़ों की वो एक सुनहरी धुन बन जाए,
आदत ऐसी बने वो मेरी की दूर होना सज़ा लगे उस से,
जब कभी में बनूँ एक बदन तो वो मेरी रूह बन जाए।

मोहब्बत में मेरी मेरे को ऐसा हसीन नशा चाहिए,
बस नशें में रहूँ सारा दिन ऐसी एक वजह चाहिए,
वो क़ैद रखें मुझे अपने दिल के तहख़ाने में इस कदर,
के मर कर भी तड़पे रूह मेरी उसके लिए ऐसी सज़ा चाहिये।

आज उनका हमें एक बेहतरीन ख़्वाब आया,

फिर मासूम से हसीन चेहरे पर उनके हमें प्यार बेहिसाब आया,

मुस्कुराहटों के क़ाफ़िले ने जब नींद तोड़ी मेरी,

फिर ख़्याल उनका हमें दिनभर बेशुमार आया।

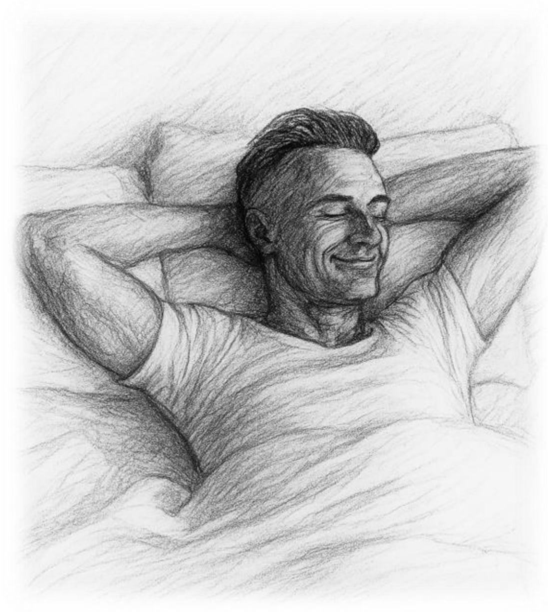

ए दिलबर....❤

तेरी मौज़ूदगी के नशे में में इस कदर बिखर जाती हूँ,

महसूस करके गर्म साँसें तेरी नज़दीक मैं रूह से निखर जाती हूँ,

मालूम है मुझे की तुम हदें याद रखते हो अपनी हर वक्त,

पर सुनकर धड़कन में तेरी नाम अपना मैं बेबस होकर फिसल जाती हूँ।